BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

''रतनपुर से प्राप्त सौर प्रतिमाऐं''

प्रदीप कुमार

तिल्दा नेवरा, रायपुर

छत्तीसगढ़ (दक्षिण कोसल) प्रारंभिक काल से ही आदि मानव की शरण स्थली रहा है। छत्तीसगढ़ भारत के हृदय स्थल में स्थित है। यद्यपि यह अरण्याच्छादित है तथापि पुरातत्त्व एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण राज्य है। छत्तीसगढ़ का प्रागैतिहासिक काल से मराठा काल तक भारतीय संस्कृति, कला एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ के शासकों की धार्मिक सहिष्णुता के फलस्वरूप सभी धर्मों (ब्राम्हण, बौद्ध एवं जैन धर्म) एवं तत्जनित कलाओं के विकास का समान रूप से अवसर प्राप्त हुआ है, जिसके प्रमाण यहाँ के प्रमुख कला केंद्रो में आज भी देखे जा सकते हैं, जो स्थापत्य कला और प्रतिमा विज्ञान के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

प्रकाश और शक्ति का प्रतीक सूर्य विश्व की अनेक संस्कृतियों में आराध्य के रूप में पूजित होते रहे हैं। अपने देश या भारतीय उपमहाद्वीप की बात करें तो सूर्योपासना के मूल यूं तो वैदिक काल से ही मिलने लगते हैं, पर कुषाणों के समय से उसमें कई परिवर्तन हुए और गुप्तकाल से यह पद्धति 'सौर संप्रदाय' के नाम से जाने जानी लगी। इसे पंचदेवताओं में से एक माना जाने लगा। इन्हीं पंचदेवताओं के आधार पर पंचायतनों की कल्पना भी की गई, जिसमें मुख्य देवता बीच में स्थित होता है तथा अन्य चारों उसके चारों तरफ या आगे पीछे रहते हैं। ये पंचदेवता हैं शिव, शक्ति, विष्णु, गणपति और सूर्य। जहां तक सूर्य प्रतिमा या प्रतीक की बात आती है तो सर्वप्रथम इसे गोल चमकदार रूप में प्रतिकृत किया गया। देखा जाए तो यह प्राचीन प्रतीकों में से एक है या सर्वाधिक प्राचीनतम प्रतीक। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार सूर्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए सुवर्ण का गोल टुकड़ा रखा जाना चाहिए। साम्ब उपपुराण में इसका वर्णन कुछ इस प्रकार है– पहले सूर्य की प्रतिमा नहीं थी, अपितु मण्डल में ही उसका पूजन होता था। जिस प्रकार आकाश में सूर्य–मण्डल विद्यमान रहता है, उसी प्रकार पहले भक्त लोग मण्डल का निर्माण कर लिया करते थे। इसके बाद जबसे विश्वकर्मा ने पुरूषाकृति सूर्य का निर्माण किया, तबसे घरों और मंदिरों में प्रतिमाओं की

स्थापना होने लगी। भविष्य पुराण के अनुसार श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब के कुष्ठग्रस्त होने पर शाकद्वीप से अग्नि पूजकों के विरोध के कारण आये हुए मग ब्राह्मणों ने सूर्य पूजा का विधान बताया था, जिसका अनुसरण करने पर साम्ब को कुष्ठ रोग से मुक्ति हुई थी। माना जाता है कि विश्वकर्मा जिनका दूसरा नाम त्वष्टा भी था ने अपनी पुत्री संज्ञा का ब्याह सूर्य से किया था। फिर संज्ञा के ही अनुरोध पर बेडौल और अत्यन्त प्रखर सूर्य को सुन्दर और सुडौल बनाया था। सूर्य उस पूरी प्रक्रिया में होने वाले कष्ट को

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

सह ना सके, और सूर्य के अनुरोध पर विश्वकर्मा ने उनके घुटने से नीचे के भाग को अपूज्य घोषित करके छोड़ दिया। इस तरह कहा जाए तो भारतीय परंपरा में सूर्य पूजा की जो परंपरा प्रतीकों से शुरू होती है वह बाद के वर्षों में मानवीय स्वरूप ग्रहण कर लेती है। महाभारत में सूर्य पुत्र कर्ण की कथा से हर भारतीय किसी ना किसी रूप में परिचित ही है।

(1) स्थानक सूर्य :– उदीच्य वेश में सूर्य प्रतिमा काले बलुए प्रस्तर पर निर्मित है, जिसकी परिमाप 17 X 37 इंच है। समपाद स्थानक सूर्य अपने दोनो हाथो में पूर्ण विकसित सनालकमल धारण किए हुए प्रदर्शित है। सूर्य किरीट मुकुट, चक्र कुण्डल, एकावली हार, चन्द्रहार, लम्बा त्रिलड़ी वक्षहार, यज्ञोपवीत, कटिसूत्र (यावियाँग), उरूदाम एवं मुक्ता दाम धारण किये है।[1] वैजयंती माला घुटने तक विस्तारित है। सूर्य के पैरो में लम्बा बूट (उपानह) दृष्टव्य है। पैरो के मध्य में सारथी अरूण बौने रूप में खड़े हुए रथ का संचालन कर रहे हैं। प्रतिमा परिकर के अधोभाग में दोनो ओर उषा तथा प्रत्यूषा देवियाँ खड़ी हुई प्रदर्शित है। सूर्य के पैरों के उभय पार्श्वों में स्थानक दण्डी एवं पिंगल का अंकन है। दण्डी के हाथो में शूल और दण्ड है। जबकि पिंगल के हाथों में पात्र और लेखनी है, जो अंशतः खण्डित है। पादपीठिका में रथ में जुते हुए सप्ताश्वों को गतिमान दिखाया गया है। कला की दृष्टि से प्रतिमा अतीव सुंदर है एवं 12वीं–13वीं शती ई. की है।

उल्लेखनीय है कि सूर्य की ऐसी ही एक अन्य प्रतिमा विश्वविद्यालय संग्रहालय, खैरागढ़ में संरक्षित एवं प्रदर्शित है, जो विष्णु धर्मोत्तर पुराण और वृहत् संहिता के विवरणों से साक्ष्य रखती है।[2]

चित्र क्रमांक–01

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

(2) रूद्र भास्कर :– मार्तण्ड भैरव की आवक्ष प्रतिमा काले बलुए प्रस्तर पर निर्मित है, जिसकी परिमाप 14 X 17 इंच है। प्रतिमा का वक्षःस्थल से नीचे का भाग पूर्णतः खण्डित है। शिव के संघात या संयुक्त प्रतिमाओं के अंतर्गत अर्द्धनारीश्वर, हरिहर, हरिहर पितामह, हरिहरहिरण्यगर्भ तथा मार्तण्ड भैरव (रूद्र भास्कर) स्वरूप मुख्य है। प्रतिमा करण्ड मुकुट, चक्रकुण्डल, कंठहार, स्तनहार तथा यज्ञोपवीत से सुसज्जित है। प्रतिमा के ऊपरी दोनो हाथो में पूर्ण विकसित सनालकमल है, जो कंधे तक उठे हुए प्रदर्शित है। जबकि निचले दाएँ हाथ में त्रिशूल एवं निचले बाएँ हाथ में सर्प दृष्टव्य है। प्रतिमा परिकर के ऊपरी उभय पार्श्वों में उड्डीयान मालाधारी गंधर्व का शिल्पाँकन है। कला की दृष्टि से यह प्रतिमा अत्यंत ही सुंदर है। सम्प्रति यह प्रतिमा रतनपुर के करैहापारा में स्थित कबीर आश्रम के सामने वेद नामक तालाब के किनारे एक चबुतरे पर अधिष्ठित एवं पूजित है। वहाँ के स्थानीय लोगो ने उक्त प्रतिमा पर चूने का रंग लगा दिया है। प्रतिमा 11वीं–12वीं शती ई. की है।

चित्र क्रमांक–02

(3) आसनस्थ सूर्य :– पद्मासन सूर्य की प्रतिमा भूरे बलुए प्रस्तर पर निर्मित है, जिसकी परिमाप 8 X 15 इंच है। सूर्य किरीट मुकुट, कर्णकुण्डल तथा यज्ञोपवीत से सुशोभित है। अपने दोनो हाथो में सूर्य पूर्ण विकसित सनालकमल धारण किए हुए हैं। सूर्य के दोनो ओर उड्डीयान मालाधारी गंधर्व प्रदर्शित है। प्रतिमा 15वीं–16वीं शती ई. की अनुमानित है। सम्प्रति यह प्रतिमा गजकिला रतनपुर के गणेश प्रवेशद्वार के पूर्व दिशा में एक दीवार की भित्ति से संलग्न है।

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

चित्र क्रमांक–03

संदर्भ :–

1.कुर्यादुदीच्य वेषं गूढं पादादुरो यावत्।।
विभ्राणस्वकर रूहे पाणिभ्यां पंकजे मुकुट धारी।
कुण्डल विभूषित वदनः प्रलम्बतरो वियडग्वृत्तः।।
कमलोदरद्युतिमुखः कंचुकगुप्तरिस्मत प्रसन्नमुखः।
रत्नोज्जवल प्रभामण्डलश्च कर्त्तुश्शुभकरोंऽर्कः।।
वृहत्संहिता, 57/46–48

2.पाषाण प्रतिमाओं का सूचीपत्र, विश्वविद्यालय संग्रहालय, खैरागढ़ (छ.ग.),
इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.), 2012, पृ. 37

3. विकिपीडिया : प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान रू लेखक – नील पुरुषोत्तम जोशी